

पद १७४

(राग: जोगिया - ताल: केहरवा)

तू शाहवली मुरशद हो जी, कहीं ज़ाहिर हो कहीं बातिन् हो ॥ध्रु. ॥
कहीं राम बने कहीं रहीम बनें। यह वजूद उलट पुलट हो जी ॥१॥
कहीं नबी, अली, महबूब बने। कहीं शाह, रतीब, अमीर,
बने ॥२॥ कहीं बुतपरस्त, कहीं खुदपरस्त, कहीं मुरशद मानिक
बंदा बने ॥३॥